ISSN: 2278-1439, Volume 06, Issue 01, No. 11, July-December 2016, Page No. 34-37

homepage: www.vcebhopal.ac.in

Research Pool

An International Interdisciplinary Journal

भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन का अध्ययन

राघवेन्द्र सिंह भदौरिया
शोधार्थी
आईसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)
Email: raghvendra9881@gmail.com

सारांशः

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 100 बच्चों को उददेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा चुना, जिनमें 50 कामकाजी एवं 50 गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चे थे, जिनकी उम्र 10 वर्ष से 16 वर्ष तक के बीच थी। समायोजन के मापन के लिए स्वनिर्मित समायोजन परिसूची का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष में गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा समायोजन स्तर उच्च पाया गया।

मुख्य विन्दु– समायोजन, कामकाजी एवं गैर कामकाजी।

प्रस्तावनाः

हमारा जीवन चुनोतियों एवं संघर्षो से परिपूर्ण है। बालकपन से हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढ़ग से जीवन संग्राम की इस लडाई को लडता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता से प्रगति करता रहता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुछ चाहते हैं और यही चाह हमें पल–पल संघर्ष करने को प्रेरित करती है, प्रत्येक व्यक्ति कोशिश करता है, कि उसकी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति से जुडी हुई उसकी कोशिशों तथा परिस्थितियों के बीच संतुलन बना रहे। अगर वह यह संतुलन कर अपने और अपने वातावरण के बीच खट–पट नहीं होने देता तो वह समायोजित कहा जाता है।

आधुनिक परिवेश में महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र जैसे शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी, वित्तीय एवं सैन्य सेवाओं आदि में अपना उत्कृष्ट योगदान देकर देश के विकास में सहायता कर रही हैं, साथ ही साथ पारिवारिक दायित्वों को भी बखूवी निभा रही हैं। वे किसी भी कार्य में पुरूषों से कमतर नही आंकी जा सकती। लेकिन उनके कामकाजी होने से उन पर जिम्मेदारियों का दोहरा भार रहता है उन्हें घर के साथ–साथ ऑफिस का कार्य भी संभालना पडता है जिससे वे बच्चों

की परवरिश पर पूरा ध्यान नहीं दे पाती जिसका प्रभाव बच्चों की समायोजन क्षमता पर पडता हैं भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन के स्तर को जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यक्ता है।

समायोजन- प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस-पास की हर प्रकार की परिस्थतियों ओर अपने व्यवहार में संतुलन रखना पडता है चूंकि व्यक्ति के आस-पास की परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं इसलिए समायोजन एक सतत प्रक्रिया है, जो कि जीवन भर चलती है। **बोरिंग, लेगफेल्ड व वेल्ड के अनुसार** ''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है''।

कुमार एंव श्रीवास्तव (2007) ने ''स्कूल से सेवानिवृत अध्यापिकाओं एवं घरेलू महिलाओं के बच्चों में समायोजन के स्तर'' का अध्ययन किया, निष्कर्ष में पाया गया, कि सेवानिवृत अध्यापिकाओं के बच्चे, गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा अधिक समायोजित थे।

समस्या कथनः

"भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन का अध्ययन"

उद्देश्यः

- भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन के स्तर को ज्ञात करना।

परिकल्पनाः

- भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 100 बच्चों को उददेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा चुना, जिनमें 50 कामकाजी एवं 50 गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चे थे, जिनकी उम्र 10 वर्ष से 16 वर्ष तक के बीच थी। प्रस्तुत शोध कार्य में समायोजन के मापन के लिए स्वनिर्मित समायोजन परिसूची का उपयोग किया गया है, जिसमें समायोजन को चार आयामों जैसे गृह समायोजन, समाज समायोजन, स्वास्थ समायोजन एवं संवेग समायोजन में बॉटा गया है। प्रत्येक आयाम से संबंधित 10 प्रश्नों को मापनी में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार मापनी में 40 प्रश्न रखे गये हैं। प्रस्तुत समायोजन परिसूची की विश्वसनीयता गुणांक परीक्षण पुन परीक्षण विधि विधि द्वारा .97 पाया गया।

समायोजन परिसूची की वेधता ज्ञात करने के लिए कारक विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया। इस विधि द्वारा गृह समायोजन कारक का वेधता गुणांक .88, स्वास्थ समायोजन कारक का वेधता

गुणांक .90, समाज समायोजन कारक का वेधता गुणांक .84 तथा संवेगात्मक समायोजन कारक का वेधता गुणांक .86 पाया गया।

प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्षः

भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है ।

तालिका क्र. 1

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रमाप विभ्रंम	टी–परीक्षण	सार्थकता (.05स्तर)
कामकाजी महिलाओं के बच्चे	50	45.8	4.38	.383	5.04	सार्थक अन्तर है
गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चे	50	47.90	4.32	.283		

व्याख्या– उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है, कि भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन स्तर का मध्यमान क्रमशः 45.8 एवं 47.90 है। इस प्रकार गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन स्तर का औसत अपेक्षाकृत अधिक है।

तालिका से स्पष्ट है, कि परिकलित टी परीक्षण का मान 5.04 है जबकि df= 98 के लिए .05 सार्थकता पर टी परीक्षण का सारणीमान 1.96 है। अतः सारणीमान से परकलित मान अधिक है अर्थात् 5.04>1.96। इस प्रकार कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होता है।

अतः यह कहते हैं, कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों में, गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा समायोजन स्तर निम्न पाया जाता है।

इस प्रकार परिकल्पना असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

आरेख क्र. 1

भोपाल शहर की कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है ।

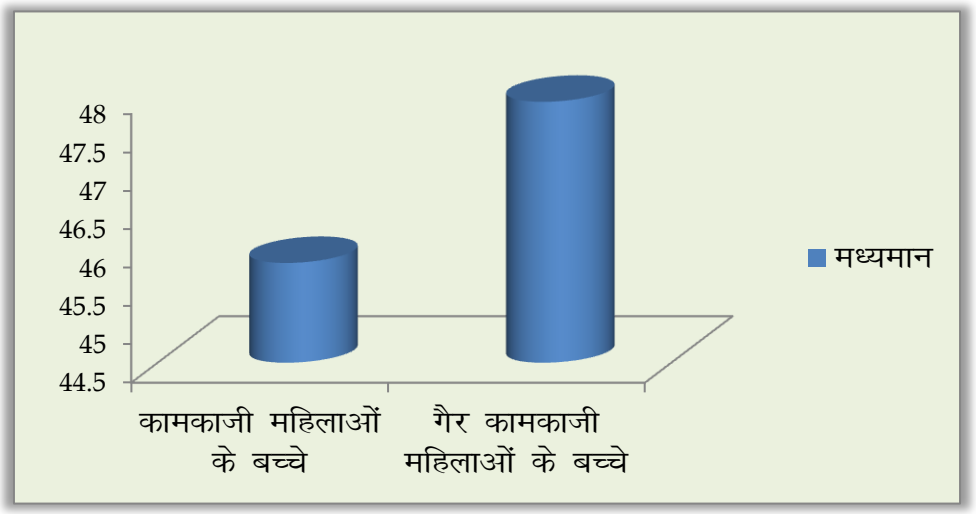

व्याख्या– आरेख क्र. 1 के अवलोकन से स्पष्ट है, कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन के मध्यमान क्रमशः 45.8 एवं 47.9 है। इस प्रकार गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन स्तर का औसत अपेक्षाकृत अधिक है।

स्पष्ट है, कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों में, गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा समायोजन स्तर निम्न पाया जाता है।

इसका कारण कामकाजी महिलाओं का कार्य की अधिकता के कारण बच्चों पर ध्यान न दे पाना हो सकता है। घर के कार्यो की सारी जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है साथ ही उन पर कार्यस्थल के कार्य की भी जिम्मेदारी होती है जिससे वे बच्चों की शिक्षा एवं खान-पान का ध्यान नहीं रख पाती ओर बच्चे का समायोजन स्तर निम्न होता चला जाता है।

सुझावः

कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन स्तर को बढाने के लिये पारिवाकि सदस्यों को सहयोग देना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. **गुप्ता, एस. के. (2008). शैक्षिक मनोविज्ञान,** प्रिन्टेज हॉल इण्डिया, नई दिल्ली।
2. **कुमार, रीता एंव श्रीवास्तव, आराधना (2007)** स्कूल से सेवानिवृत अध्यापिकाओं एवं घरेलू महिलाओं के बच्चों में समायोजन के स्तर, जनरल ऑफ सायॅकोलाजीकल रिर्सच 51।
3. **गुप्ता, डिम्पल एवं अस्थाना, मधु (2008).** कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में सामाजिक सहयोग का महत्व, एशियन जनरल ऑफ सायॅकोलाजी एण्ड एजुकेशन, 41।
4. **राजपूत, जे. एस. (1988–1992). फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिर्सच,** एन. सी. ई. आर. टी.नई दिल्ली वॉल्यूम-1।
5. **सिंह, रामपाल एवं शर्मा, ओ. पी. (2002). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,** अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।